ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in June 2025

वर्तमान परिवेश में परिवार के अंतर्गत वृद्धों की स्थिति का अध्ययन: शिवपुरी जिले के संदर्भ में

अरविन्द कुमार शर्मा, शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, कला संकाय, पी.के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी (भारत)
डॉ. महालक्ष्मी जौहरी, प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग, कला संकाय, पी.के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी (भारत)

सारांश

वृद्धावस्था जीवन का एक महत्वपूर्ण चरण है, जिसमें व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों का सामना करना पड़ता है। पारंपरिक भारतीय समाज में वृद्धजनों को सम्मान और आदर प्राप्त होता था, तथा वे परिवार के मार्गदर्शक माने जाते थे। किन्तु आधुनिकता, नगरीकरण, बदलती पारिवारिक संरचना और जीवनशैली में बदलाव के कारण वृद्धजनों की स्थिति में कई परिवर्तन आए हैं। शिवपुरी जिला, जो मध्य प्रदेश के प्रमुख जिलों में से एक है, ग्रामीण और शहरी दोनों सामाजिक-सांस्कृतिक संरचनाओं को दर्शाता है। वर्तमान परिवेश में यहां के वृद्धों की स्थिति को समझना आवश्यक है क्योंकि यह न केवल परिवार की संरचना बल्कि समाज की मूलभूत धारणाओं को भी प्रतिबिंबित करता है। इस शोध का उद्देश्य शिवपुरी जिले में वर्तमान सामाजिक-आर्थिक परिवेश में वृद्धजनों की स्थिति का विश्लेषण करना है। इसमें उनके समक्ष आने वाली चुनौतियों, और परिवार में उनकी भूमिका का अध्ययन किया गया है। अतः वर्तमान परिवेश में वृद्धजनों की स्थिति को सुधारने के लिए पारिवारिक सदस्यों को समन्वित प्रयास करने की आवश्यकता है, जिससे वे सम्मानपूर्वक और आत्मसम्मान के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सकें।

मुख्यशब्द- वृद्धावस्था जीवन, सामाजिक परिवर्तन, भारतीय समाज, शिवपुरी जिला, पारिवारिक सदस्य, जीवन स्तर आदि।

प्रस्तावना

शिवपुरी जिले में संयुक्त परिवार प्रणाली के स्थान पर एकल परिवार प्रणाली का प्रचलन बढ़ता जा रहा है, जिससे वृद्धजनों को परिवार में उचित देखभाल और सम्मान प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। आधुनिक जीवनशैली में युवा वर्ग अपनी व्यावसायिक और आर्थिक जिम्मेदारियों में व्यस्त रहता है, जिसके कारण वृद्धजन उपेक्षा, अकेलापन और सामाजिक अलगाव का अनुभव कर रहे हैं। कुछ वृद्धजन आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं, लेकिन अधिकतर को अपने परिवार के सदस्यों पर निर्भर रहना पड़ता है। पेंशन, वृद्धावस्था पेंशन योजना, तथा अन्य सरकारी लाभकारी योजनाएं कुछ हद तक उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार करती हैं, किंतु फिर भी कई वृद्ध अपने दैनिक जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए संघर्ष करते हैं। स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी वृद्धावस्था में एक गंभीर चुनौती हैं। शिवपुरी जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, चिकित्सकों की अनुपलब्धता और जागरूकता की न्यूनता के कारण वृद्धजन उचित चिकित्सा सहायता प्राप्त नहीं कर पाते। उच्च रक्तचाप, मधुमेह, हृदय रोग और गठिया जैसी बीमारियां वृद्धजनों में आम पाई जाती हैं, किन्तु नियमित चिकित्सा परामर्श और दवाओं की कमी के कारण उनकी स्वास्थ्य स्थिति अधिक जटिल हो जाती है। सामाजिक दृष्टिकोण से, वृद्धजनों की स्थिति में धीरे-धीरे परिवर्तन आया है। जहां एक ओर वे पारिवारिक निर्णयों में अपनी भूमिका खोते जा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर कुछ वृद्ध अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर समाज में सक्रिय बने रहने का प्रयास कर रहे हैं। धार्मिक और सामाजिक संगठनों के माध्यम से वे अपनी पहचान बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं। वृद्धाश्रमों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कई वृद्धजनों को उनके परिवारों द्वारा उपेक्षित किया जा रहा है।

साहित्य की समीक्षा

अग्रवाल, स्वप्निल (2021) विभिन्न कारणों से वैश्विक स्तर पर और भारत में वृद्ध जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। सामाजिक-आर्थिक संरचना में बदलाव, जैसे महिलाओं का कार्यक्षेत्र में सक्रिय भागीदारी और परिवारों का परमाणु स्वरूप ग्रहण करना, वृद्धों की पारिवारिक देखभाल की परंपरा को बदल रहा है। वृद्धाश्रम, जो पहले असामान्य थे, अब इन जरूरतमंद वृद्धों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तेजी से बढ़ रहे हैं। यह महत्वपूर्ण है कि वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धों की सामाजिक-जनसांख्यिकीय स्थिति को समझा

जाए। इस अध्ययन का उद्देश्य वृद्धाश्रम और परिवारों में रहने वाले वृद्धों के सामाजिक-जनसांख्यिकीय कारकों का मूल्यांकन और तुलना करना था।

मौर्य, बी. आर. मौर्य (2018) साल 2050 तक भारत की वरिष्ठ नागरिक जनसंख्या 30 करोड़ तक पहुँचने की संभावना है। भारत सरकार ने वरिष्ठ नागरिकों के लिए कई सामाजिक सहायता कार्यक्रम बनाए हैं। यह लेख उनमें से पाँच का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है, जिससे आप या आपके परिवार के वृद्धजन सूचित निर्णय ले सकें। भारतीय सरकार विभिन्न रणनीतियों और पहलों को विकसित करने पर कार्य कर रही है, ताकि वृद्ध नागरिकों को एक स्वस्थ, आनंदमय, सशक्त और आत्मनिर्भर जीवन प्रदान किया जा सके, जो समुदाय और पिछली पीढ़ियों से भी जुड़ा हो। सरकार इस बात को समझती है कि वृद्ध नागरिकों को आवास, स्नेह, देखभाल और चिकित्सा जैसी विभिन्न आवश्यकताएँ होती हैं। इस कारण से, सरकार विभिन्न योजनाओं और नीतियों को लागू कर रही है, जिनका उद्देश्य वृद्ध नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।

दासगुप्ता, बिष्णुप्रिया (2013) किसी भी समाज में वृद्धों की स्थिति इस बात पर निर्भर करती है कि समाज उन्हें कैसे देखता है और उनके प्रति कैसा व्यवहार करता है। यहाँ "समाज" से तात्पर्य ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के विभिन्न आयु वर्ग के पुरुषों और महिलाओं से है। अध्ययन बताते हैं कि नगरीकरण, औद्योगीकरण और शिक्षा वृद्धों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। भारतीय संदर्भ में, वृद्धों की सामाजिक स्थिति मुख्य रूप से उनके परिवार के सदस्यों की धारणा पर निर्भर करती है, और उसके बाद समाज के अन्य लोगों पर। भारतीय संस्कृति और परंपरा ने हमेशा वृद्धों को सम्मान दिया है और समाज में उनका विशेष स्थान रहा है। समाजशास्त्रियों और मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि संयुक्त परिवार प्रणाली और परिवार के पास होने वाली भूमि के कारण वृद्धों का यह स्थान सुनिश्चित था। लेकिन नगरीकरण, प्रवासन और पारिवारिक भूमि के विभाजन के कारण संयुक्त परिवार प्रणाली टूट रही है, जिससे वृद्धों की आर्थिक स्थिति कमजोर हुई है और उनके प्रति सम्मान भी कम हुआ है। वर्तमान में, भारत नगरीकरण, आधुनिकीकरण और प्रवासन की प्रक्रिया से गुजर रहा है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में संयुक्त परिवार तेजी से समाप्त हो रहे हैं। इस बदलाव के कारण वृद्धों की स्थिति में गिरावट आई है। एक सर्वेक्षण में पाया गया कि 80% लोगों का मानना है कि पहले की तुलना में आज वृद्धों की सामाजिक स्थिति में गिरावट आई है। वृद्धों की तुलना में युवाओं ने इस स्थिति को कम गंभीरता से देखा।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

1. वृद्धों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. परिवार में वृद्धों की स्थिति का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन मध्य प्रदेश में स्थित शिवपुरी जिले में सम्पन्न किया गया है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन वर्णात्मक शोध प्रचना के अन्तर्गत किया गया है।

निदर्शन पद्धति

शिवपुरी जिले की वरिष्ठ नागरिक कल्याण समिति की सदस्य सूची में से 90 हिन्दू वृद्धों का चयन दैव निदर्शन पद्धति के प्रयोग द्वारा किया गया है। जिनकी आयुसीमा 60 वर्ष से 80+ वर्ष की है, उनसे सूचनाओं का संकलन साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया है।

परिणाम और व्याख्या

सामाजिक आर्थिक स्थिति

तालिका-1 उत्तरदाताओ की सामाजिक-आर्थिक स्थिति

आयु	संख्या	प्रतिशत
60-70	35	38.89%
70-80	40	44.44%

80+	15	16.67%
कुल	**90**	**100**

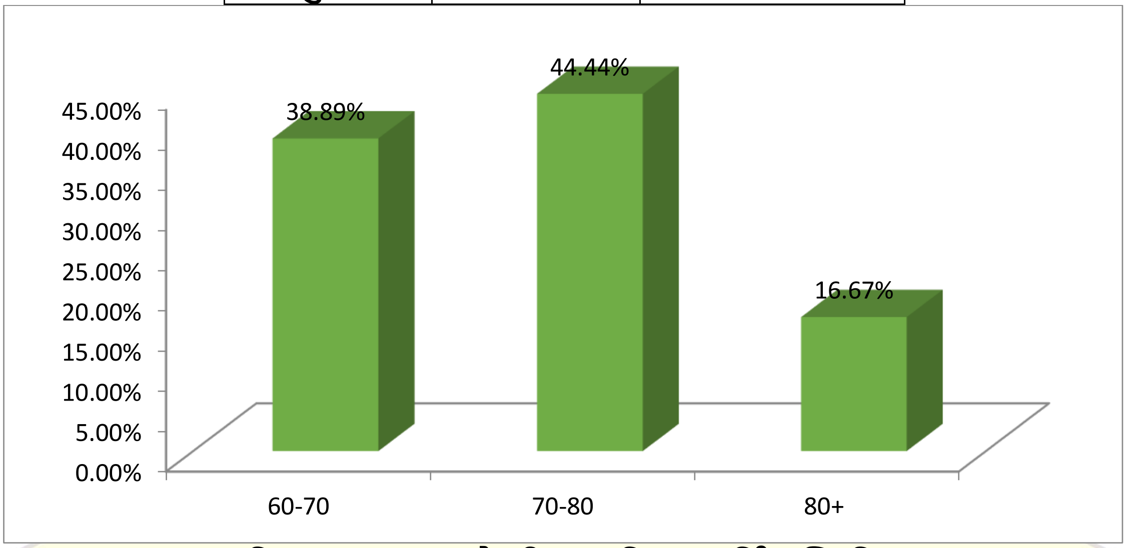

चित्र-1 उत्तरदाताओ की सामाजिक-आर्थिक स्थिति

तालिका-1 और चित्र 1 के अनुसार उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को दर्शाती है, जिसमें उनकी आयु-वर्गानुसार संख्या और प्रतिशत को स्पष्ट किया गया है। इस तालिका के अनुसार, कुल 90 उत्तरदाताओं को तीन आयु समूहों में विभाजित किया गया है: 60-70 वर्ष, 70-80 वर्ष, और 80 वर्ष से अधिक।

पहले आयु वर्ग 60-70 वर्ष में 35 उत्तरदाता शामिल हैं, जो कुल उत्तरदाताओं का 38.89% हैं। यह दर्शाता है कि इस अध्ययन में शामिल वरिष्ठ नागरिकों में इस आयु वर्ग के लोगों की महत्वपूर्ण भागीदारी है।

दूसरे आयु वर्ग 70-80 वर्ष के अंतर्गत 40 उत्तरदाता आते हैं, जो 44.44% का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह आंकड़ा संकेत देता है कि इस आयु वर्ग के लोग सर्वाधिक संख्या में अध्ययन का हिस्सा बने हैं, जिससे स्पष्ट होता है कि इस उम्र के व्यक्तियों की उपस्थिति सर्वाधिक है।

तीसरे और अंतिम आयु वर्ग 80 वर्ष से अधिक के उत्तरदाता केवल 15 हैं, जो कुल का 16.67% हैं। यह दर्शाता है कि इस अध्ययन में अपेक्षाकृत कम संख्या में अति-वृद्ध व्यक्ति सम्मिलित हुए हैं।

तालिका-2 परिवार के सदस्यों का व्यवहार

परिवार का व्यवहार	संख्या	प्रतिशत
अच्छा	40	44.44%
बुरा	50	55.56%
कुल	**90**	**100**

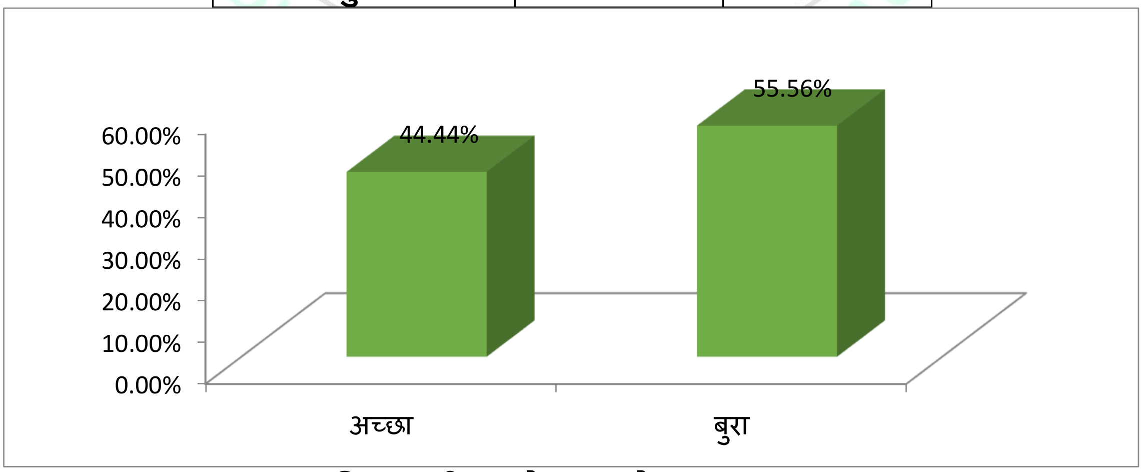

चित्र-2 परिवार के सदस्यों का व्यवहार

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in June 2025

तालिका 2 और चित्र 2 के अनुसार उत्तरदाताओं के प्रति उनके परिवार के सदस्यों के व्यवहार को दर्शाया गया है। कुल 90 उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, परिवार के व्यवहार को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है: "अच्छा" और "बुरा"। अध्ययन के अनुसार, 40 उत्तरदाताओं (44.44%) ने अपने परिवार के व्यवहार को अच्छा माना है। इसका अर्थ है कि इन व्यक्तियों को परिवार से सहयोग, देखभाल और सम्मान प्राप्त हो रहा है। यह सकारात्मक सामाजिक संरचना को दर्शाता है, जहाँ बुजुर्गों की देखभाल और उनके प्रति संवेदनशीलता बरकरार है। दूसरी ओर, 50 उत्तरदाता (55.56%) ने परिवार के व्यवहार को बुरा माना है। यह प्रतिशत दर्शाता है कि अध्ययन में शामिल अधिकतर बुजुर्गों को पारिवारिक उपेक्षा, असम्मान, या किसी न किसी प्रकार की कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। यह तथ्य चिंताजनक है और पारिवारिक मूल्यों में संभावित गिरावट की ओर संकेत करता है, जिससे वृद्धजनों की मानसिक और भावनात्मक स्थिति प्रभावित हो सकती है।

तालिका-3 परिवार में होने वाले निर्णयों में भागीदारी

निर्णयों में भागीदारी	संख्या	प्रतिशत
राय ली जाती है	30	33.33%
नहीं ली जाती है	60	66.67%
कुल	**90**	**100**

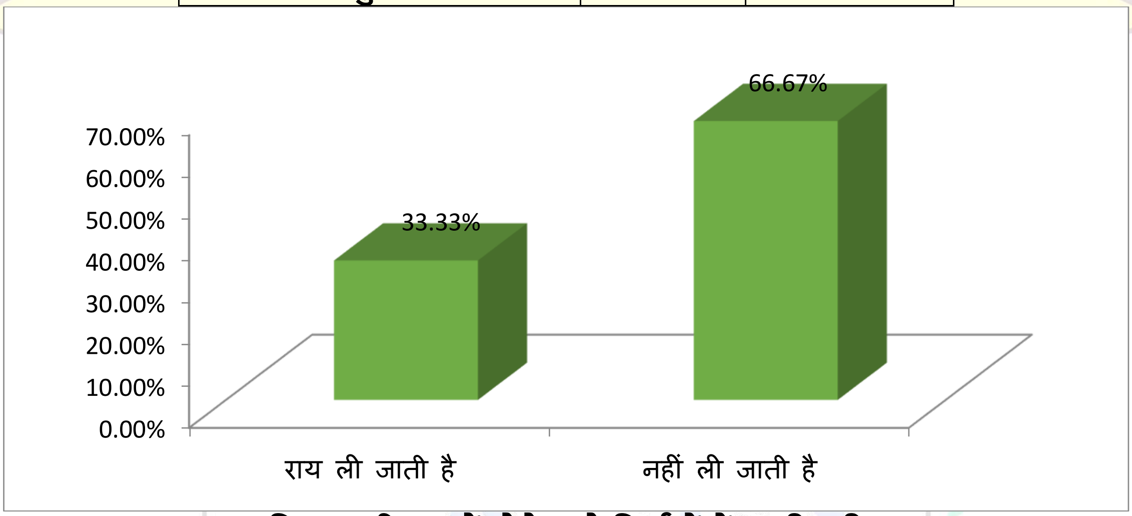

चित्र-3 परिवार में होने वाले निर्णयों में भागीदारी

इस तालिका 3 और चित्र 3 के अनुसार बुजुर्ग उत्तरदाताओं की पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी को दर्शाया गया है। कुल 90 उत्तरदाताओं के आधार पर, यह दो श्रेणियों में विभाजित है: "राय ली जाती है" और "नहीं ली जाती है"। अध्ययन से पता चलता है कि 30 उत्तरदाता (33.33%) ऐसे हैं जिनकी राय परिवार के निर्णयों में ली जाती है। इसका अर्थ है कि इन बुजुर्गों को परिवार में सम्मान प्राप्त है, उनकी सलाह को महत्व दिया जाता है, और वे परिवार की गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। यह संकेत करता है कि इन परिवारों में बुजुर्गों को अनुभवी और मार्गदर्शक के रूप में देखा जाता है।

इसके विपरीत, 60 उत्तरदाता (66.67%) ने बताया कि उनकी राय परिवार के निर्णयों में नहीं ली जाती है। यह दर्शाता है कि अधिकांश बुजुर्गों को परिवार की महत्वपूर्ण चर्चाओं और फैसलों से बाहर रखा जाता है। यह सामाजिक संरचना में परिवर्तन को दर्शाता है, जहाँ वृद्धजनों की भागीदारी कम हो रही है, जिससे वे अपने ही परिवार में उपेक्षित महसूस कर सकते हैं।

तालिका-4 वृद्धों का भोजन के प्रति दृष्टिकोण

भोजन के प्रति दृष्टिकोण	संख्या	प्रतिशत
अच्छा	35	38.89%
बुरा	55	61.11%
कुल	**90**	**100**

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in June 2025

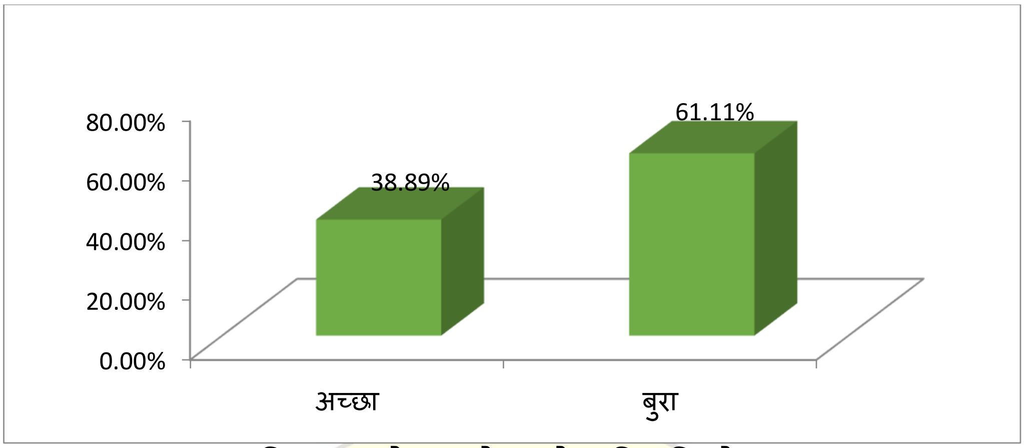

चित्र-4 वृद्धों का भोजन के प्रति दृष्टिकोण

इस तालिका 4 और चित्र 4 के अनुसार वृद्ध उत्तरदाताओं के भोजन के प्रति दृष्टिकोण को दर्शाया गया है। कुल 90 उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर, उन्हें दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है: "अच्छा" और "बुरा"। अध्ययन के अनुसार, 35 उत्तरदाता (38.89%) भोजन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। इसका अर्थ है कि ये वृद्धजन अपने दैनिक आहार से संतुष्ट हैं और उन्हें उचित पोषण प्राप्त हो रहा है। यह इंगित करता है कि उनके भोजन की गुणवत्ता, मात्रा और नियमितता संतोषजनक है, जिससे उनकी शारीरिक एवं मानसिक सेहत पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वहीं, 55 उत्तरदाता (61.11%) ने भोजन के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्त किया है। इसका तात्पर्य यह है कि ये वृद्धजन अपने भोजन से असंतुष्ट हैं, जिसका कारण भोजन की गुणवत्ता, स्वाद, पोषण स्तर की कमी, या व्यक्तिगत पसंद-नापसंद हो सकता है। यह संकेत देता है कि अधिकांश बुजुर्गों को पर्याप्त और संतुलित आहार नहीं मिल रहा है, जिससे उनकी सेहत पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

तालिका-5 बीमारी के समय परिवार की भूमिका

देखभाल की स्थिति	संख्या	प्रतिशत
हां	40	44.44%
नहीं	50	55.56%
कुल	**90**	**100**

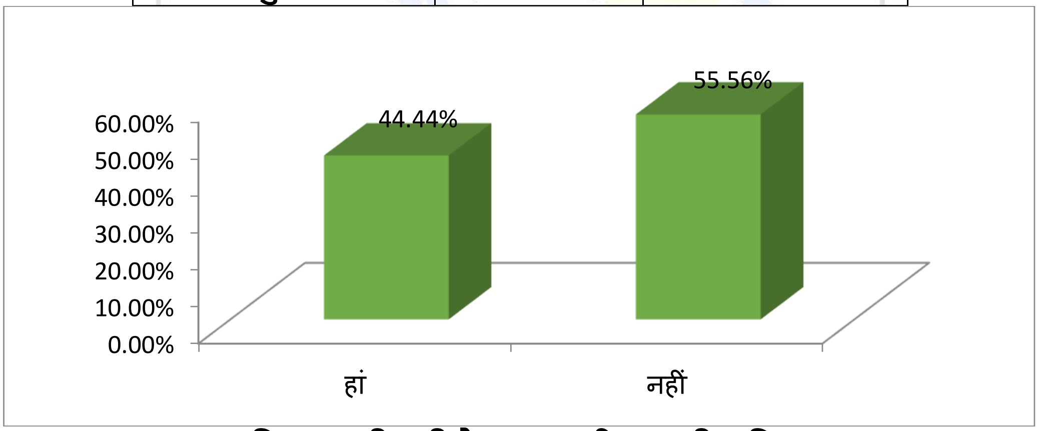

तालिका-5 बीमारी के समय परिवार की भूमिका

इस तालिका 5 और चित्र 5 अनुसार में वृद्ध उत्तरदाताओं द्वारा बीमारी के दौरान परिवार की देखभाल की स्थिति को दर्शाया गया है। कुल 90 उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है: "हाँ" (परिवार देखभाल करता है) और "नहीं" (परिवार देखभाल नहीं करता)।

अध्ययन के अनुसार, 40 उत्तरदाता (44.44%) ऐसे हैं जिन्हें बीमारी के समय परिवार का सहयोग और देखभाल मिलती है। इसका अर्थ है कि इन वृद्धजनों को उनके परिवार द्वारा चिकित्सीय सहायता, भावनात्मक सहयोग और देखभाल प्रदान की जाती है, जिससे उनके स्वास्थ्य और मानसिक स्थिति पर

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in June 2025

सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह दर्शाता है कि इन परिवारों में बुजुर्गों के प्रति संवेदनशीलता और जिम्मेदारी की भावना बनी हुई है।

दूसरी ओर, 50 उत्तरदाता (55.56%) ने बताया कि बीमारी के समय उन्हें परिवार की ओर से कोई विशेष देखभाल नहीं मिलती। यह आंकड़ा चिंताजनक है और दर्शाता है कि अधिकांश वृद्धजन बीमारी के समय उपेक्षित महसूस करते हैं। इसका कारण परिवार की व्यस्त जीवनशैली, बुजुर्गों के प्रति लापरवाही, या आर्थिक-सामाजिक कारण हो सकता है। यह प्रवृत्ति बुजुर्गों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है और उनके मानसिक तनाव को बढ़ा सकती है।

तालिका-6 बीमारी के समय चिकित्सा करवाने की स्थिति

चिकित्सा स्थिति	संख्या	प्रतिशत
हां	55	61.11%
नहीं	35	38.89%
कुल	**90**	**100**

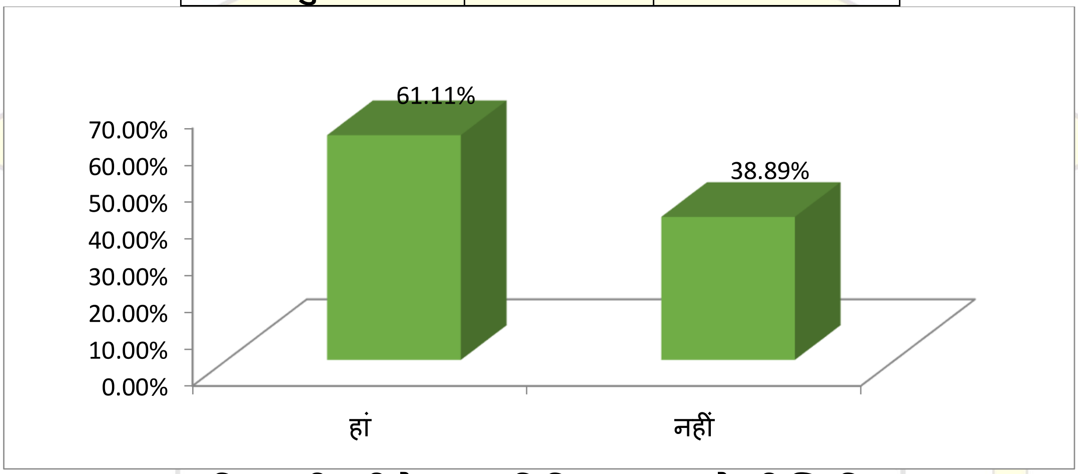

चित्र-6 बीमारी के समय चिकित्सा करवाने की स्थिति

इस तालिका 6 और चित्र 6 के अनुसार वृद्ध उत्तरदाताओं की बीमारी के दौरान चिकित्सा प्राप्त करने की स्थिति को दर्शाया गया है। कुल 90 उत्तरदाताओं के उत्तरों को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है: "हाँ" (चिकित्सा करवाई जाती है) और "नहीं" (चिकित्सा नहीं करवाई जाती)। अध्ययन के अनुसार, 55 उत्तरदाता (61.11%) को बीमारी के समय उचित चिकित्सा सहायता प्राप्त होती है। यह सकारात्मक संकेत है कि इन वृद्धजनों को स्वास्थ्य सुविधाएँ मिल रही हैं और उनके परिवार या समाज द्वारा उनकी स्वास्थ्य आवश्यकताओं का ध्यान रखा जा रहा है। इससे उनके स्वास्थ्य में सुधार की संभावना बढ़ती है और वे अपनी वृद्धावस्था को अपेक्षाकृत अच्छे स्वास्थ्य में व्यतीत कर सकते हैं। वहीं, 35 उत्तरदाता (38.89%) ने बताया कि बीमारी के समय उन्हें कोई चिकित्सा सुविधा नहीं मिलती। यह एक गंभीर चिंता का विषय है क्योंकि इस उम्र में उचित उपचार न मिलने से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ गंभीर हो सकती हैं। चिकित्सा न मिलने के पीछे आर्थिक तंगी, परिवार की उपेक्षा, जागरूकता की कमी या अन्य सामाजिक और व्यक्तिगत कारण हो सकते हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान परिवेश में परिवार के अंतर्गत वृद्धों की स्थिति का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि शिवपुरी जिले में वृद्धजन विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। पारिवारिक संरचना में बदलाव, एकल परिवारों की बढ़ती प्रवृत्ति, आर्थिक असुरक्षा और युवाओं की बदलती जीवनशैली ने वृद्धों की स्थिति को प्रभावित किया है। कई वृद्धजन भावनात्मक उपेक्षा, स्वास्थ्य समस्याओं और सामाजिक अलगाव का अनुभव कर रहे हैं, जिससे उनकी जीवन गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। परिवार में सदस्यों का व्यवहार उनके प्रति अच्छा नहीं है। पारिवारिक निर्णयों में उनकी राय नहीं ली जाती है। वे परिवार द्वारा मिलने वाले भोजन से संतुष्ट नहीं है। बीमार पड़ने पर परिवार के सदस्य उनकी देखभाल नहीं करते। लेकिन चिकित्सा करवाते हैं।

उनमें से लगभग आधे वृद्ध रिश्तेदारों के उत्सवों में भी सम्मिलित नहीं होते है। हालांकि, कुछ परिवारों में अभी भी पारंपरिक मूल्यों के चलते वृद्धों को सम्मान और सहयोग प्राप्त हो रहा है। सरकार और समाज को वृद्धजनों के कल्याण हेतु समुचित योजनाएं और जागरूकता कार्यक्रमों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है, ताकि वे अपने जीवन के इस महत्वपूर्ण चरण को गरिमा और आत्मसम्मान के साथ व्यतीत कर सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, स्वप्रिल और खान, आफताब। (2021)। देखभाल घरों में और पारिवारिक व्यवस्था के भीतर रहने वाली बुजुर्ग आबादी में सामाजिक-जनसांख्यिकीय चर के बीच अंतर - कोटा, राजस्थान में एक तुलनात्मक अध्ययन। जर्नल ऑफ़ एविडेंस बेस्ड मेडिसिन एंड हेल्थकेयर. 8(31):2817-2821.
2. मौर्य, बी आर मौर्य. (2018)। भारत में बुजुर्ग लोगों की सुरक्षा के लिए कानूनी प्रयासों का एक आलोचनात्मक अध्ययन। 10.13140/आरजी.2.2.33015.60323।
3. दासगुप्ता, बिष्णुप्रिया और मित्रा, श्रीजता। (2013)। आधुनिक भारत में बुजुर्गों की सामाजिक स्थिति। अंतःविषय सामाजिक और सामुदायिक अध्ययन के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 7(3):129-140
4. यादव, ललन (2014). वृद्धाश्रम में निवास करने वाले वृद्धों का समाजशास्त्रीय अध्ययन' राधा कमल मुकर्जी चिन्तन परम्परा, वर्ष 16 (1), जनवरी जून. 84-86
5. अग्रवाल, उमेश चन्द्र. (2009). 'बढ़ते बुजुर्ग, घटती सुरक्षा" कुरुक्षेत्र, वर्ष 55 (12) अक्टूबर 2009, 54
6. द्विवेदी, परेश (2014), 'वृद्धावस्था के विविध आयाम, समस्याएं एवं चुनौतियाँ, राधा कमल मुकर्जी : चिन्तन परम्परा, वर्ष 16 (1), जनवरी-जून, 21-23
7. रेडी, पी.एच. (1996) दि हैल्थ आफ दि एज्ड इन इंडिया, हैल्थ ट्रांजीशन रिव्यू, सप्लीमेंट टू वॉल्यूम 6, 234
8. यादव, के०एन०एस० (2011). 'एजिंग सम इमरजिंग इश्यूज, नई दिल्ली मानक पब्लिकेशन्स, 6
9. ढिल्लन, परमजीत कौर (1992), साइको-सोशल आसपैक्ट्स ऑफ एजिंग इन इंडिया' नई दिल्ली : कान्सेप्ट पब्लिशिंग, 16
10. गन्डोतरा, वीणा एवं सरजू पटेल (2011) एजिंग इन इन्टरडिसिप्लीनरी अप्रोच नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स, 4
11. ओसवाल्ड एफ. हिबर, ए०, वाही एच. डब्ल्यू एंड मोलेनकॉप, एच. (2005), एजिंग एंड पर्सन-एनवायरमेन्ट फिट इन डिफेन्ट अरबन नेबरहुड यूरोपियन जर्नल आफ एजिंग, वॉल्यूम 2 (2). 88-97